आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:28-08-14

ज्ञान सागर बाप ने आज एक और रीति से हम बच्चों को आत्मा का स्वदर्शन चक्र घुमाना सिखलाते हुए कहा, उत्थान और पतन, सतोप्रधान और तमोप्रधान, शिवालय और वेश्यालय, ऐसे दो-दो बातें स्मृति में रहें तो तुम स्वदर्शन चक्रधारी बन जायेंगे.

सबसे पहले हम यह जाने कि बाबा हमें स्वदर्शन चक्र घुमाना क्यों सिखलाते है या स्वदर्शन चक्र घुमाने से क्या फायदा है?

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से स्वयं कि देही-अभिमानी स्थिति बनाने में मदद मिलेगी.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा को अन्तरमुखी बनने कि प्रैक्टिस होगी.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा को ड्रामा का सारा पार्ट बुद्धि में आ जायेंगा.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा व्यर्थ संकल्पों पर क़ाबू पा सकेंगी.

बाबा ने आज सारी मुरली में दो-दो बातों कि स्मृति दिलाकर हमें स्वदर्शन चक्र फिराना सिखाया, उसे ही रिपिट करेंगे जिसे कि हमें भी उसकी प्रैक्टिस होती जाये.

- उत्थान और पतन ---> ये दो बातें हमें याद दिलाती है कि हम सतयुग में कितने उत्तम और पवित्र थे, हम कितने ऊँच थे और कलियुग के अन्त में कितने अपवित्र और नीच बनते हैं. अब पुरुषोत्तम संगमयुग पर फिरसे हम उत्तम और पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते है.

- वाइसलेस और विशश वर्ल्ड ---> सतयुग-त्रेतायुग को पवित्र, ऊँच कहा जाता है उसको कहा जाता है वाईसलेस वर्ल्ड. कल्प के आदि में हम वाईसलेस वर्ल्ड के निवासी थे फिर जन्म लेते-लेते द्वापर से हम विकार में गिरे तो पतित विशश बने. आधाकल्प, द्वापर-कलियुग हम विशश रहे, अब फिर हमको वाईसलेस सतोप्रधान बनना है.

- सतोप्रधान और तमोप्रधान ---> सतयुग के आदि में इस विश्व कि सर्व मनुष्य आत्माये संपूर्ण सतोप्रधान थी तो वायुमण्डल भी संपूर्ण सतोप्रधान था. इस लिए कहा जाता है भारत ही सतोप्रधान राज्य था. सतोप्रधान दुनिया की निशानी यह लक्ष्मी-नारायण हैं, ५ हजार वर्ष

की बात है. अभी कलियुग के अन्त में यह है तमोप्रधान दुनिया. अभी पुरुषार्थ कर वापस सतोप्रधान आत्मा बन सतोप्रधान दुनिया में जाना है.

- उत्तम और कनिष्ठ ---> सतयुग के आदि में भारत बहुत उत्तम था, कलियुग के अन्त में वही भारत कनिष्ठ बना है.

- क्षिरसागर और विषय वैतरणी नदी ---> स्वर्ग में जो देवी-देवताये क्षिरसागर में रहते है, वही फिर कलियुग में विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते है.

- शिवालय और वेश्यालय ---> अभी संगम पर शिवबाबा आकर देवी-देवता धर्म कि स्थापना करते है तो हम भारतवासीओं को उस बेहद के बाप से बेहद का, २१ जन्म स्वर्ग (सतयुग-त्रेता) का वर्षा मिलता है जिसे ही शिवालय कहा जाता है. फिर मध्य से रावण राज्य (माया का राज्य) शुरु होता है तो वही भारत धीरे-धीरे रजो-तमो होते अभी कलियुग के अन्त में पुरा तमोप्रधान, वेश्यालय हो गया है. जिसे ही बाबा फिरसे वापस शिवालय बनाते है. तो सदा याद रहे कि अब हम शिवालय में जा रहे है. यह तो बहुत खुशी कि बात है.

- ज्ञान और भक्ति ---> ज्ञान है दिन और भक्ति को रात कहा जाता है. ज्ञान से देवी-देवताये नेचरल देही-अभिमानी होकर रहते है और फिर वही देह-अभिमानी बनकर भक्ति करते है. अब हम भक्ति से निकल ज्ञान में जा रहे है.

- सच्ची आत्मा और झूठी आत्मा ---> सतयुग में आत्मा संपूर्ण सच्ची होती है तो ज़ेवर यानी शरीर भी सच्चा यानी नेचरल रुप से गोरा होता है. फिर आत्मा में खाद पड़ती गई और कलियुग के अन्त में आत्मा संपूर्ण झूठी बन जाती है तो शरीर भी पतित हो जाता है. अब वापस पुरुषार्थ कर आत्माको योगबल से संपूर्ण सच्चा बनाना ही है.

यह बेहद कि सृष्टि चक्र का ड्रामा अनंतकाल से फिरता ही रहता है.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .